AS - 2036

M.A. (First Semester) Examination 2013

HISTORY

Paper: MH 1.1.

(Concepts Method and tools in History)

खण्ड 'अ' Section 'A'

उ० (1) (i) ट्रेवेलियन (ii) जे. बी. ब्यूरी (iii) वाल्टेयर (iv) वेबर (v) कालिंगवु
(vi) जी. पी. गूच (vii) फ्रैंकेल (viii) पी. गार्डिनर, (ix) वाल्श (x) आगस्त कां

खण्ड 'ब' Section 'B'

उत्तर (02) इतिहास की अवधारणा को संक्षिप्त रूप में बताते हुए, इतिहास की व्युत्पत्ति एवं अर्थ स्पष्ट करना है। एवं परिभाषा में गार्डिनर, रेनियर, चार्ल्स फर्थ, ए. एल. राउज, गोविंदचंद्र पाण्डेय, कालिंगवुड, वाल्श, ई. एच. कार, ओकशाट, जोन डिवी, मैंडलबा इत्यादि विद्वानों की दी हुई परिभाषाएं देनी हैं। और इतिहास का अर्थ स्पष्ट करना है।

उत्तर (03) इतिहास का प्रारंभ बताते हुए इतिहास के इस कथन की व्याख्या करनी है कि इतिहास का कोई अर्थ नहीं होता।' कार्ल आर पापर के अनुसार इतिहास का कोई लक्ष्य नहीं होता इसलिए उसका कोई अर्थ नहीं होता। इस कथन की व्याख्या करते हुए उसे स्पष्ट करना है साथ ही यह भी बताना है कि इतिहास लेखन का अर्थ 'इतिहास की संरचना' होता है जिसे निरर्थक नहीं कह सकते अतएव इतिहास का अर्थ होता है।

(Dr. Seema Pandey)

उत्तर(04) आस्कर वाइल्ड के अनुसार कोई भी मूर्ख इतिहास की रचना कर सकता है किन्तु इसे लिखने के लिए किसी प्रतिभा संपन्न व्यक्ति की अपेक्षा है। नाथू राम गोडसे, ओसवाल्ड, बेअंत सिंह, सतवंत सिंह ने भी अपनी मूर्खता के कारण इतिहास में स्थान प्राप्त किया किन्तु इतिहास के निर्माण तथा इतिहास लेखन में अंतर है। क्योंकि इतिहास लेखन एक प्रकार का कौशल है जो सर्वसाधारण को प्राप्त नहीं है। जिस तरह चिकित्साशास्त्र पढ़ने वाले सभी छात्र डॉक्टर हो सकते हैं परन्तु इतिहास पढ़ने वाले छात्र इतिहासकार नहीं हो सकते क्योंकि इतिहास लेखन एक कौशल है।

इतिहास के कुछ प्रमुख तत्व होते हैं जिन्हें इतिहास में समुचित स्थान देकर इतिहासकार अपने कौशल को प्रदर्शित करता है। (1) ऐतिहासिक तथ्य (2) तथ्यों का चयन (3) वैज्ञानिक तकनीकी विधि का प्रयोग (i) कैंची तथा गोंद शैली Scissor and Paste History. (ii) कबूतरी सुराख (Pigeon holding) (iii) प्रश्न (Question).

उत्तर(05)- घटना के कारणों की व्याख्या में इतिहासकार कभी किसी प्रभाव में आने से या अपनी व्यक्तिगत रुचि एवं पूर्वाग्रहों के कारण पक्षपात करता है तो कभी-कभी सत्य घटना को इतना यथावत् प्रस्तुत करने का न्यायसंगत कार्य करता है कि वह आदर्शहीन चित्रण हो जाता है। यह एक अच्छे गवेषक का गुण नहीं है, उसे पक्षपात रहित होना चाहिए और न्यायवादी भी होना चाहिए, किन्तु यह भी कि उसकी गवेषणा समसामयिक लोगों के हित में होनी चाहिए और उसके कथन में ~~तथ्य~~ तथ्यातथ्य के साथ-साथ आदर्श भी स्थापित होना चाहिए। गवेषणा या इतिहास-लेखन कार्य में एक इतिहासकार के लिए उक्त दोनों ही महत्वपूर्ण माने गये हैं। ~~[illegible]~~ -

इतिहासकार भी अतीत के पात्रों से संबंधित बुरे कार्यों पर नैतिक निर्णय देकर वर्तमान समाज की रक्षा करता है। अतः कुछ विद्वानों का मानना है कि इतिहासकार नैतिक न्याय दे सकता है। ऐक्टन इस बात का प्रबल समर्थक है। इस प्रकार ऐक्टन के विभिन्न मतों का पक्ष रखते हुए, कथन की व्याख्या करनी है।

उत्तर (06) कार्य कारण संबंध - ई. एच कार का कथन है इतिहास का अध्ययन कारणों का अध्ययन है। इस संदर्भ में कारण का अर्थ भूमिका में दर्शाये हुए कारण की अवधारणा को बताना है जिसके अनुसार कारणों के अभाव में किसी घटना या कार्य का होना संभव नहीं है। अरस्तू, हेरोडोटस, कालिंगवुड, मांटेस्क्यू, ई. एच. कार, रोशनफील्ड एडवर्ड मेयर, प्रो. जी बैरक्लाफ, डेविड थामसन, वाल्श के कथनों की व्याख्या करते हुए कार्य कारण संबंध पर निबंध लिखें।

उत्तर (07) - इतिहासकारों ने इतिहास में जो दर्शन ढूंढा और उसके आधार पर जो सिद्धान्त प्रतिपादित किया वह इतना प्रसिद्ध हुआ कि उस समय के लिए वह एक 'वाद' बन गया। इसी को विद्वानों ने उन इतिहासकारों एवं उनके प्रतिपादित सिद्धान्तों का इतिहासवाद इंगित किया। 'इतिहासवाद' एक ऐसा शब्द है जो अपने आप में पूर्ण है और इसका संबंध न तो किसी समय के इतिहास से है और न ही किसी इतिहासकार से किन्तु इसका प्रयोग हम संपूर्ण इतिहास एवं समस्त इतिहासकारों के संबंध में किया करते हैं। इस प्रकार इस प्रकार इतिहासवाद भी किसी समय विशेष की देन है। इस प्रकार किसी भी ऐतिहासिक घटना के सत्यान्वेषण में ऐतिहासिक ज्ञान के प्रयोग को इतिहासवाद कहते हैं।

उत्तर - (08) - प्राच्य और पाश्चात्य, दोनों ही इतिहासकारों ने इतिहास की प्रकृति को ठीक उसी प्रकार भिन्न २ रूपों में अभिव्यक्त किया जिस प्रकार से उन्होंने उसके अर्थ एवं परिभाषा को अलग अलग पहलू से प्रस्तुत किया है इतिहास की प्रकृति विज्ञान है या नहीं, कला के पक्ष - विपक्ष के विचार और इतिहास की प्रकृति दार्शनिक है या नहीं इस संबंध में विभिन्न विद्वानों के विचारों की व्याख्या करनी है। इसके अलावा ~~किसी~~ इसके स्वरूप को कहानी, सामाजिक विज्ञान, ज्ञान, समसामयिक विचार, अतीत-वर्तमान के मध्य सेतु जैसा माना है तो कुछ विद्वानों ने प्रमुख घटनाओं का संग्रह। इन सभी तथ्यों को दर्शाते हुए इतिहास की प्रकृति पर प्रकाश डालना है।